लेखक-परिचय :

नाम : मिथिलेश

पिता के नाम : सिद्धेश्वर प्रसाद

जनम-तिथि : 5-1-1937

जनम-अस्थान : खखरी काशीचक, वारसलीगंज, नवादा

सिच्छा : स्नातक

मिथिलेश प्रगतिसील चेतना के कहानीकार हथ। इनकर कहानी में गरीब, पीड़ित वंचित के पीड़ा व्यक्त होवऽ हे। ई ''सारथी' 'माटी के दीया' पतरिका के संपादन कैलन। 'सारथी' अभी भी लगातार छप रहल हे। 'रधिया' इनकर खंड काव्य हे। अकासवानी आउ दूरदर्सन से बराबर इनकर कहानी पाठ हो हे। ई नवादा में मगही मंडप संस्था चलावऽ हथ।

'दरकल खपरी' इनकर एगो मसहूर कहानी हे। जेकरा में एगो दलित पीड़ित आउ वंचित परिवार के चित्र खींचल गेल हे। एगो गरीब परिवार में अभाव के जिनगी कइसे पूरे परिवार के बरबाद कर देवऽ हे तइयो ऊ बरबादी के रेगिस्तान पर भी पौधा उगावेला चाहऽ हे। 'दरकल खपरी में सास-पुतोह भउजाइ-ननद-गोतनी, बेटा-बेटी के बीच पूरा परिवार बबूर के पेड़ के काँटा पर कइसे टंगल रह के जीवन बितावऽ हे, ठीक दरकल खपरी लेखा ऊ जीवन देखाई पड़े लगऽ हे।

दरकल खपरी

खपरी के लड़ाई विस्तार लेवे लगल। भेल ई कि हुसेनमा वली के बूँट भूँजइ के हल। बिसुआ मुँह पर हल। रोटियानी-सतुआनी लेले घठिहन अनाज के भुँजाय-पिसाय घरे-घर पसरल हल। अइसे भुँजाय-पिसाय के झमेला से बचइ ले कते अदमी बजारे से सत्तू ले आल हल। बुलकनी के औसों नइहरे से माय कूट-पीस के भाय मारफत भेजवा दे हल। बेचारी के ई साल तऽ रबिया के ढाँगा खरिहाने में धइल हल। घरेसर के फुरसत होवे तब तो! आजकल ने गाँव में बैल रहल, ने दमाही। खेती टरेक्टर पर दारोमदार।

हे। एकर नास भी सम्भव न हे। विद्या के बाँटला पर ई आउ बढ़ऽ हे। ई लेल विद्या के आदर आउ सम्मान करना जरूरी हे। अपने लोग धने ला बेअखरा रहऽ ही। विद्या से धन छन भर में हो जाहे। ई लेल कहल भी गेल हे कि 'पूत सपूत तो का धन संचय, आउ पूत कपूत तो का धन संचय।' सब लोग नतमस्तक हो गेलन आउ गोविन्द जी के दूरदृस्टि के सराहे लगलन।

अप्पन कमाई से विमल गाँव में एगो हाई इस्कूल, एगो मिडिल इस्कूल आउ एगो अपर प्राइमरी इस्कूल बनौलन हे। गाँव में उन्हकर बनल मकान दूरे से चमकऽ हे। आवइत-जाइत रहगीर दूरे से देख के मकान आउ गाँव के साथ विमल के सराहना करऽ हथ।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. कोई अतिथि के अयला पर जल्दीबाजी में स्वागत ला कउन-कउन इन्तजाम करल जाहे?
2. गोविन्द गाँव के दक्खिन कउन गाँव में गेलन?
3. गोविन्द कउन गाँव के निवासी हथ?
4. गोविन्द वर तलासे ला किनका घरे गेलन?
5. गोविन्द के दमाद के नाम का हल?

लिखित :

1. नीचे लिखल वाक्य के सप्रसंग व्याख्या करल जाय :

   (क) दउड़ते-दउड़ते गोविन्द के जूता खिया गेल, पर अनुकूल वर नहियें मिलल/तिलक के सुरसा के समान बढ़ल मुँह में लड़की के बाप हनुमान बनथ तो कइसे?

   (ख) अब हम्मर इज्जत अपनहीं के हाथ में हे, अपने कइसहूँ पार लगाऊँ।

   (ग) अगर लड़का होसियार होयत, तऽ घर आउ खेत बनते देरी न लगत।

   (घ) पूत सपूत तो का धन संचय आउ पूत कपूत तो का धन संचय।